ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 156-158
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

थारू समाज में आधुनिक परिवर्तन

सुदर्शन कुमार
एम.ए., पी.एच.डी. समाजशास्त्र, शारीरिक शिक्षक, गवर्नमेंट माउण्ट एवरेस्ट मध्यविद्यालय,
कंकड़बाग, पटना (बिहार), भारत

Received- 24.08.2020, Revised- 28.08.2020, Accepted - 03.08.2020 E-mail: - rksharpur2@gmail.com

सारांश : ***भारतीय समाज में अनेक जनजातियां पायी जाती हैं। जिनमें थारू भी एक है थारू समाज पश्चिम चम्पारण में पाई जाती है। वर्तमान समय में थारू लोगों पर शिक्षा, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, विकास योजनाओं, आदि का प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण उनके समाज में अनेक आधुनिक परिवर्तन हो रहे हैं।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय समाज, जनजातियां, थारू समाज, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण ।

भारत में जनजातियों की संख्या दो करोड़ से भी अधिक है। इन जनजातियों की जनसंख्याओं में बहुत भिन्नता है। तीन सौ की संख्या से लेकर तीन लाख तक की संख्या वाली जातियां हैं। ये आदिवासी भिन्न–भिन्न वंशों तथा भिन्न–भिन्न भाषा परिवारों के हैं तथा इनके मूल अर्थतन्त्र बहुत भिन्न–भिन्न प्रकार के हैं। उनके निवासों के भौतिक तथा जैविक परिवेश में भी उतनी ही अधिक भिन्नता है। वे सुन्दर वन के पंकिल जंगलों से लेकर हिमालय के उन्नत शिखरों तक में पाये जाते हैं। वे आसाम के उष्ण कटिबन्धीय घने जंगलों से लेकर राजस्थान के रेगिस्तान तक में एक सहज भाव से रहते हैं। वंश, भाषा, निवास तथा अर्थतन्त्र में एक विस्मयजनक विविधता उनकी संस्कृति में बहुत सम्यक प्रभाव से झलकता है। ये आदिवासी देश के लिए एक साथ ही शक्ति और दुर्बलता के स्त्रोत हैं। दुर्बलता के स्त्रोत इस अर्थ में है कि वे विदेशियों को राजनैतिक स्वार्थ साधनों का अवसर देते हैं और शक्ति के स्त्रोत इसलिए है कि उनकी संस्कृतियां सम्यक हैं।

समाज गतिशील है, यह कभी स्थिर नहीं रहता। मानव समूह भीतरी या बाहरी शक्तियों के दबाव के नीचे मन्द अथवा तीव्र गति से परिवर्तित होते रहते हैं। एक सामाजिक समुदाय के सभी सांस्कृतिक लक्षण एक साथ परिवर्तित नहीं होते। विघटनकारी शक्तियों के सम्मुख संस्कृति के केन्द्रीय लक्षण उपान्तीय लक्षणों की अपेक्षा अधिक देर तक टिकते हैं। संस्कृति लक्षणों का एक संगठित तंत्र है। परिणामतः जब इनमें से एक परिवर्तित होता है तब बाकी में भी कुछ परिवर्तन हो जाता है। परिवर्तन की यह लहर अपने उद्‌गम स्थल से दूरी के अनुपात से क्रमशः क्षीण होती हुई सम्पूर्ण तन्त्र में एक साथ संचारित हो जाती है, जैसे भूकम्प, लहरें अपने उद्‌गम केन्द्र से दूर हटती हुई क्षीणतर होती जाती है।

भारत एवं बिहार तथा झारखंड में रहने वाले आदिवासियों के समाज में मुख्यतः इन दिनों परिवर्तन की गति अधिक तेज हो गई है। इसाई प्रचारकों तथा हिन्दू रीति–रिवाजों का प्रभाव उनके समाज पर व्यापक रूप से पड़ा है। इसाई पादरियों ने आदिवासियों को धीरे–धीरे बड़ी संख्या में इसाई बनाना शुरू किया था। अब तो छोटानागपुर प्लेटो में शायद ही कोई ऐसा गांव होता है जहां के आदिवासियों ने कुछ–न–कुछ संख्या में इसाई धर्म को स्वीकार नहीं कर लिया हो और कुछ गाँव तो ऐसे मिलेंगे जहां की सम्पूर्ण आबादी इसाई हो गई है। इसाई आदिवासी लोगों के आचार, विचार, सदाचार तथा आदत, रीति–रिवाज और रहन–सहन गैर इसाई आदिवासियों से बिल्कुल ही भिन्न हो गये हैं। धर्म परिवर्तन के साथ ही सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में परिवर्तन आने लगे हैं। उनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं जिनके कारण अन्य सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन प्रभावित होते हैं।

इसाई धर्म के अतिरिक्त औद्योगीकरण के कारण भी आदिवासी समाज बड़ी तेजी से परिवर्तनशील हो रहे हैं। छोटानागपुर में उद्योगीकरण का प्रभाव यह पड़ा कि आदिवासी लोग अपने घर–वार से वंचित होते चले गये। बड़े–बड़े कारखानों तथा नये शहरों के लिए बड़े–बड़े भू क्षेत्रों की आवश्यकता होती गई और इस कारण इन स्थानों में रहने वाले आदिवासियों को बड़ी संख्या में अपने–अपने गांव को आवश्यकतानुसार खाली कर देना पड़ा। उन्हें अपने मकान तथा भूमि के लिए रूपये तो दिए गए किन्तु उनकी सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सामाजिक हॉनियों का कोई बदला नहीं मिल सका। कभी–कभी उन्हें मकान बनाने के लिए दूसरे स्थान पर भूमि दे दी गई, किन्तु अधिकतर उन्हें केवल हरजाना दे देना ही पर्याप्त समझा गया। इन पिछड़ें हुए आदिवासियों के लिए उद्योगीकरण इस प्रकार से बड़ा संकट लेकर आया

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

और अधिकतर ऐसा ही देखने में आया कि भूमि तथा मकान के बदले उन्हें जो रूपये मिले उन्हें अधिकांश आदिवासियों ने बिना सोचे समझे खर्च कर दिया और फिर उन्हें दूसरा घर का वैसी भूमि प्राप्त न हो सकी। ऋण से लदे हुए गरीब आदिवासियों को अपना कर्ज भी जो चुकाना था और लालची साहुकारों के लिए इससे अच्छा अवसर मिलना भी कठिन था। फलस्वरूप अच्छे और खुशहाल परिवार में आदिवासी अधिकतर निर्धन भूमिहीन किसान बनते चले गये।

इसके अतिरिक्त औद्योगीकरण के फलस्वरूप आदिवासी जगत में अनगिनत अन्य परिवर्तनों का भी अनुभव होने लगा। उद्योगीकरण अपने साथ कुछ विशेष मूल्यों और नवीन सामाजिक जीवन निर्माण करता है जो अधिकतर परम्परागत आदिवासी रीति–रिवाज और मूल्यों से मेल नहीं खाते और कहीं–कहीं बिल्कुल ही विरूद्ध रहते हैं। पचास वर्ष पूर्व तक अधिकांश आदिवासी लोग सांस्कृतिक पृथक्करण में रहा करते थे। लेकिन ज्यों–ज्यों कारखाने खुलते गये और उद्योगीकरण का प्रभाव पड़ने लगा तो आदिवासियों की अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं में भी परिवर्तन होने लगा। इस प्रक्रिया को मानव वैज्ञानिक लोग गैर आदिवासीकरण कहते हैं। इतिहास तथा भूगोल के ज्ञान तथा मूल्यों से वंचित आदिवासियों के समक्ष समय और स्थान की नवीन तथ्य आधुनिक कल्पनाएं आयी। अब तक वह जंगलों में घंटों शिकार के पीछे अपना समय लगाता था किन्तु उद्योगीकरण ने अब उसे समय का महत्व अच्छे ढंग से समझा दिया।

स्वतंत्रता के बाद सड़कें बनाकर आदिवासियों प्रदेशों को उद्घाटित करने की ओर ध्यान दिया गया। मोटरगाड़ियाँ आदि जनजातिय क्षेत्रों में सुदूर भीतर तक समाज में जाती है। छोटानागपुर में प्रत्येक महत्वपूर्ण केन्द्र में मोटर बसों का जो कि मार्केट बसें, वही जाती है, एक पूरा तांता है। सप्ताह में एक बार ये बसें व्यापारियों को आदिवासी क्षेत्रों में ले जाते हैं। ये व्यापारी गांव के लोगों को अपनी सामग्री बेचते हैं और उनके बदले में उनकी बनी वस्तुओं को सुदूर प्रदेशों में निर्यात के लिए लेते हैं। इसे आदिवासी लोगों में अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। मोटर, बसें अब सैंकड़ों आदिवासियों को व्यापार अथवा मनोरंजन के लिए गांवों से कसबों तथा नगरों में अथवा ऐसे नगरों में जहाँ अदालतें है और जहाँ अपनी शिकायतों का निवारण कर सकते हैं, ले जाती है। रेलवे लाइनों के जाल ने भी जो कि आदिवासी क्षेत्र से होकर गुजरता है, आदिवासियों की अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन को गंभीरता से प्रभावित किया है। दक्षिण–पूर्वी रेलवे के रांची–लोहरदगा क्षेत्र में लगभग प्रत्येक स्टेशन एक अत्यन्त समृद्ध व्यापार केन्द्र के रूप में विकसित हो गया है जहाँ कि अधिकांश आदिम जातियों से बाहर के व्यापारियों ने अपनी बस्तियाँ बसा ली है। इन क्षेत्रों के आदिम जातीय लोगों से भिन्न लोग स्थानीय लोगों में नयी वस्तुयें तथा नवीन विचारों का समावेश कर रहे हैं। ये लोग इनको अन्य गांवों में बड़ी तेजी से प्रचारित कर देते हैं।

डाकघर सामाजिक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण कारण है। डाक सेवा का आदिवासी क्षेत्रों में बहुत सुदूरवर्ती स्थानों तक विस्तार कर दिया गया है। मणिपुर वर्मा सीमा तक में, इम्फाल से लगभग तीस मील दूर एलल में एक डाकघर है। डाकघर आजीविका के लिए सुदूर स्थिर कार्य क्षेत्रों में गये आदिवासी तथा उसके घर के बीच सम्पर्क रखने में बहुत महत्वपूर्ण साधन है। अपने घर पत्र लिखता है और आवश्यकता होने पर पैसा भेजता है। आदिवासी अब अपने परिवार से विच्छिन्न नहीं होता। जब वह वापस लौटता है तो वह नये विचार, नयी वस्तुएं तथा नवीन जीवन विधी अपने साथ लाता है, जो स्थानीय जीवन को प्रभावित करते हैं। डाक द्वारा स्थानीय लोगों को समाचार पत्र उपलब्ध होने से भी परिवर्तन प्रक्रिया को प्रत्युत्तर होने में सहायता मिली है।

समाचार पत्र परिवर्तन में बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है। ये संसार भर के समाचार देते हैं। आदिवासी यह अनुभव करने लगता है कि संसार उसके गांव तथा आसपास के प्रदेश तक ही सीमित नहीं है। अत्यन्त सुदूरवर्ती देश तथा उनके निवासी, जिनकी जीवन विधियां तथा विचारधाराएं उससे बहुत भिन्न है, समाचार पत्रों के द्वारा उनके दृष्टि पथ में आती है। वह समाचार पत्र द्वारा अंकित दृष्टिकोणों और विचारों में भाग लेना आरम्भ करता है। आदिवासी भाषाओं के समाचार पत्र जैसे की पश्चिमी बंगाल में संथाली भाषा में, आदिवासीय आकांक्षाओं और अपेक्षाओं के संदेश आदिवासी प्रदेशों के कोने–कोने में संचारित कर देते हैं। यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि विधानसभाओं और लोकसभाओं के लिए वयस्क मताधिकार के इस युग में ये समाचार पत्र कितना प्रभाव आदिवासियों पर डालते होंगे।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का भी बहुत बड़ा महत्व है। आजकल आदिवासियों की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है और छोटानागपुर तथा संथाल परगना में अधिकांश स्कूल खोले गये हैं। केवल रांची जिले में अब तक लगभग 1522 प्राइमरी स्कूल, 90 मिडिल स्कूल, 21 हाई स्कूल तथा 24 अन्य स्कूल हैं। इनमें से कुछ तो सरकार द्वारा चलाये जा रहे हैं। कुछ इसाई मिशनरियों

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

द्वारा और कुछ आदिजाति सेवक मंडल द्वारा। किन्तु स्कूलों में जो शिक्षा दी जा रही है वह आदिवासी लोगों के जीवन तथा मूल्यों से मेल नहीं खाती। यही कारण है कि कुछ वर्षों तक इन स्कूलों में रह जाने के बाद एक–एक आदिवासी युवक अपने समाज में अपने को प्रतिकूल पाता है और फिर मजबूर होकर शहरों, खानों तथा कारखानों की ओर देखने लगता है फिर अधिकतर उन्हें हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। उस कारण शिक्षा उनके व्यक्तित्व पर उतना प्रभाव नहीं डालती जितना की अपनी मातृभाषा के माध्यम से दी जाने पर डालता। कम से कम प्राइमरी स्कूल तक तो मातृभाषा में शिक्षा अवश्य ही दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्तियों को शिक्षक बनाकर भेजना चाहिए, जिन्हें आदिवासियों की भाषा की अधिक जानकारी हो और जो उनके सामाजिक मूल्यों तथा संस्कृति का ज्ञान रखते हों। फिर भी शिक्षा उनके विचारों कल्पनाओं तथा अभिलाषाओं को प्रभावित करती है।

आदिवासी लोग, अज्ञानवश जन्म तथा मृत्यु का कारण जादू तथा अलौकिक आत्माओं को मानते थे। उनके वैध (ओझा) बीमारी के लिए देव शक्ति से प्रेरित कारणों को उत्तरदायी पाते थे और परिणामतः निदान के लिए या तो बलि और पूजा का आश्रय लेते थे अथवा प्रतिशोधात्मक जादू का आश्रय लेते थे। अब शिक्षा तथा बाह्य सम्पर्क के कारण आदिवासियों का ऐसे साधनों से विश्वास कम हो गया है। अस्पताल तथा राज्य द्वारा संचालित घुमते–फिरते दवाखाने आदिवासी रोगियों को स्थानीय साधनों के असफल रहने पर अपनी ओर आकर्षित करते हैं। स्थानीय डाक्टरों ने भी आदिवासियों का उनकी अपनी उपचार विधि में विश्वास हटाने तथा नवीन उपचार विधि में विश्वास बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया है। जादू तथा कर्म में विश्वास हटाने में इसका परोक्ष हाथ रहा है और इस प्रकार इससे आदिवासियों के जीवन में बहुत गहरा परिवर्तन आया है।

विभिन्न विकास योजनायें भी बड़े पैमाने पर उनके समाज में परिवर्तन ला रही है। दूसरे साधनों के विपरीत यह भूमि तथा समाज में भरपूर सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन लाती है। इसके द्वारा लाये हुए परिवर्तन सुविचारित योजना द्वारा आते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य है गांव के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा करना है। केवल यही बात की अधिकांश सरकारी प्रशिक्षित कर्मचारी बड़ी संख्या में गांवों में स्थायी से रहते हैं तथा गांव वालों से मिलते हैं। सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए काफी हैं। अच्छे ढंग की खेती, नवीन शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सफाई का उचित प्रबन्ध इत्यादि उत्पादन के प्राचीन तरीकों तथा लोगों की विचारधारा को पर्याप्त रूप से बदल रहे हैं। आदिवासी गांवों में पंचायती राज के लागू होने से महान परिवर्तन हो रहे हैं। इसके कारण गांव की प्राचीन सत्ता के ढांचे में परिवर्तन होना अनिवार्य है। सरकार द्वारा अवश्य ही इस बात की कोशिश की जा रही है कि कर्मचारियों को आदिवासी जीवन तथा संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान देकर वहां भेजा जाय ताकि इन क्रांतिकारी परिवर्तनों से आदिवासी समाज का ढांचा सुरक्षित रह सके।

आदिवासी प्रदेशों में मण्डल व अवर मण्डल स्तर पर प्रधान कार्यालयों के होने से वहाँ अधिकारी, वकील, क्लर्क, व्यापारी, डॉक्टर तथा अध्यापक अपने परिवारों के साथ रहते हैं। ये लोग अधिकांशतः आदिवासी नहीं होते। चाईबासा जहां की सिंहभूम का जिला प्रधान कार्यालय है, ऐसा ही एक नगर है। सैंकड़ों लोग बसों, गाड़ियों से अथवा पैदल ही प्रतिदिन इस नगर में आते हैं। वहाँ एक साप्ताहिक बाजार लगता है जहाँ हजारों आदिवासी तथा दूसरे लोग क्रय–विक्रय के लिए तथा मनोरंजन के लिए एकत्र होते हैं। यह एक बहुत बड़ा सम्पर्क क्षेत्र है जो कि जिले के दूर–दूर तक के गांवों में वस्तुओं तथा विचारों के संचार में सहायक होते हैं। आदिवासियों तथा अन्य जातियों के स्थायी निवास साथ–साथ रहते हैं और उनमें निरन्तर सम्पर्क रहता है। यह सांस्कृतिक लक्षणों के आदान–प्रदान का बहुत बड़ा केन्द्र है। इसी प्रकार एक रांची जिले का अवर मण्डल केन्द्र है गुमला। ये स्थान औद्योगिक केन्द्रों तथा मंडियों के समान ही आदि जाति भिन्न सांस्कृतिक तत्वों के विकास के केन्द्र हैं। ये वस्तुओं तथा विचारों के विशाल वितरण पथ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. हरिश्चन्द्र उप्रेती 'भारतीय जनजातियां', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. सिपाही सिंह 'श्रीमंत' 'थरूहट के लोकगीत' (प्रकाशक–श्रीमंत प्रकाशन, स्टेशन रोड मढ़ौरा)।
3. विजय शंकर उपाध्याय / विजय प्रकाश शर्मा कृत 'भारत की जनजातीय संस्कृति'।
4. ब्रह्मदेव शर्मा की 'आदिवासी विकासः एक सैद्धान्तिक विवेचन', म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
5. नदीम हुसनैन की 'ट्राइबल इण्डिया टू–डे', हरनाम पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*